ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No2, April – June, 2026/171

नारी चेतना के सन्दर्भ में ममता कालिया का उपन्यासः सपनों की होम डिलीवरी

दीक्षा सिंह एवं महेन्द्र कुमार त्रिपाठी

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.289

1. सारांश–

ममता कालिया कृत उपन्यास 'सपनों की होम डिलीवरी' समकालीन भारतीय समाज की उस नारी की कहानी है, जो सपनों की दुनिया में विचरण करती है, किंतु वास्तविकता के कठोर धरातल पर ठोकर खाती हुई अपनी चेतना को जागृत करती है। यह शोध पत्र उपन्यास में वर्णित नारी चेतना के विविध स्वरूप का चित्रण करता है – एक ऐसी चेतना जो पितृसत्तात्मक बेड़ियों से मुक्ति की खोज में है, संबंधों में समानता की मांग करती है एवं स्वालंबन की राह पर अग्रसर है। उपन्यास की मुख्य पात्र रुचि शर्मा के जीवनानुभवों के माध्यम से ममता कालिया आधुनिक नारी की चुनौतियों, द्वंद्व और अन्ततः आत्मसाक्षात्कार का यथार्थ चित्रण करती हैं। उपन्यास में सपने 'होम डिलीवरी' की तरह सुगम्य प्रतीत होते हैं, परन्तु उनकी प्राप्ति में व्यक्तिगत, पारिवारिक व सामाजिक बाधाएं प्रमुख भूमिका निभाती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र यह समझाने का प्रयास करता है कि नारी चेतना को एक गतिशील शक्ति के रूप में समझना व देखना चाहिए, जहाँ नारी अबला की छवि से उबरकर सबला बनने की दिशा में अग्रसर होती है। प्रस्तुत शोध पत्र नारीवादी साहित्य सिद्धान्त एवं गहन पाठ, विश्लेषण की गुणात्मक व व्याख्यात्मक पद्धति को आत्मसात करके यह भी बताने का प्रयास करता है कि 'सपनों की होम डिलीवरी' उपन्यास किस प्रकार समकालीन हिंदी साहित्य में प्रतिनिधि नारीवादी उपन्यास है। साथ ही इसमें अन्य पद्धतियों का भी प्रयोग किया गया है जिससे नारी सशक्तिकरण व उसकी स्वतंत्रता का समग्र व बहुस्तरीय विवेचन व विश्लेषण हुआ है। यह शोध पत्र नारी की बदलती भूमिका एवं उनकी आकांक्षाओं को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज है।

2. बीज या मुख्य शब्द –

ममता कालिया, सपनों की होम डिलीवरी, नारी चेतना, सामाजिक बदलाव, नारीवाद, आधुनिक नारी, आर्थिक स्वतंत्रता, पारिवारिक जीवन, पितृसत्तात्मक सत्ता, पाककला।

3.प्रस्तावना–

हिंदी उपन्यास के पटल पर वरिष्ठ कथाकार ममता कालिया की उपस्थिति सातवें दशक से निरन्तर बनी हुई है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के शिक्षित, परिवर्तनशील एवं संघर्षरत समाज का सजीव चित्र आपके उपन्यासों में विविध आयाम में परिलक्षित है। वास्तव में ममता कालिया ने अपने समय एवं समाज को पुनर्परिभाषित करने का जोखिम लगभग अपनी प्रत्येक रचना में उठाया है।

ममता कालिया कृत 'सपनों की होम डिलीवरी' उपन्यास नाइजैला लॉसन एवं उनके पति साची की वास्तविक घटना पर आधारित है। इस उपन्यास के सन्दर्भ में वे स्वयं लिखती हैं –**"कुछ समय पहले विदेश की एक लोकप्रिय पाककला विशेषज्ञ नाइजैला लॉसन और उसके पति साची के झगड़े की चर्चा सरेआम हुई थी।..... मेरे मन–मस्तिष्क पर इस ख़बर का चकरघिन्नी असर हुआ।"**[1]

- **शोधार्थी : हिंदी विषय, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)**
- **शोध निर्देशक – हिंदी विषय, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)**

वास्तविक घटना पर आधारित यह उपन्यास भारतीय मध्यम वर्गीय परिपेक्ष्य में नारी चेतना की गतिशीलता को चित्रित करता है। उपन्यास की नायिका रुचि शर्मा के जीवन से उपन्यास प्रारम्भ होता है। रुचि शर्मा का पूर्व पति प्रभाकर नारी को वस्तु मात्र समझता है। रुचि, प्रभाकर का घर छोड़कर शिक्षा ग्रहण करती है और टी0वी0 पर कुकरी शो से प्रसिद्धि अर्जित करती है, लेकिन अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद व्यक्तिगत जीवन में असुरक्षा, एकाकीपन एवं टूटी शादी के परिणामों से संघर्ष करती है। पत्रकार सर्वेश नारंग के साथ उनका परिपक्व व सम्मान पर आधारित संबंध नारी चेतना के नये आयाम को चित्रित करता है।

4.साहित्य समीक्षा–

ममता कालिया का उपन्यास 'सपनों की होम डिलीवरी' एक यथार्थवादी एवं गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह उपन्यास पितृसत्तात्मक व्यवस्था व नारीवादी चिन्तन के स्वरूप पर चर्चा करता है। इस पर शोध कार्य सीमित है। जिसमें से कुछ इस प्रकार से हैं–

1. ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना, डॉ. अनिता सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, डी० बी० एस० कालेज, गोविंद नगर, कानपुर।
2. ममता कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना, डॉ० विद्या शशीशेखर शिंदे, आय. सी. एस. कालेज, खेड, रत्नागिरी महाराष्ट्र।
3. कालिया के उपन्यासों में नारी जीवन का संघर्ष, स्वाती पाण्डेय, शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, म0प्र0।
4. ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी की पारिवारिक स्थिति, जोगिन्द्र, शोधार्थी, MDU, रोहतक।

'सपनों की होम डिलीवरी' पर शोध पत्र सीमित हैं एवं इनके गहन सामाजिक एवं साहित्यिक विश्लेषण की अवश्यकता है। प्रस्तुत शोध पत्र इसी कमी को पूरा करने का प्रयास करता है। क्योंकि इस शोध पत्र के माध्यम से नारी चेतना के प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डाला गया है। जिससे समकालीन समाज में कामकाजी नारी के विचारों व जीवन संघर्षों की नई सकारात्मक दिशा प्राप्त हुई है।

5.शोध पद्धति –

प्रस्तुत शोध पत्र में ममता कालिया के उपन्यास 'सपनों की होम डिलीवरी' में नारी चेतना के चित्रण का विश्लेषण नारीवादी, साहित्यिक, विश्लेषणात्मक व सांस्कृतिक पद्धति पर आधारित है। यह पद्धति नारी जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक सन्दर्भों व उसके अनुभवों को केन्द्र में रखकर शोध करती है। साथ ही प्राथमिक स्त्रोत के रूप में 'सपनों की होम डिलीवरी' के मूल पाठ का उपयोग किया गया है, जबकि द्वितीयक स्रोत में ममता जी की अन्य रचनाएं, समीक्षाएं एवं नारी विमर्श पर आधारित शोध पत्र शामिल हैं।

6. विवेचन–

'सपनों की होम डिलीवरी' ममता कालिया का चर्चित उपन्यास है, जो सन् 2016 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास लगभग छानबे पृष्ठों का है। प्रस्तुत उपन्यास वर्तमान समाज के बदलते रिश्तों को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। **"रिश्ता चाहे पति–पत्नी का हो, माता–पिता और सन्तान का हो या प्रेमी–प्रेमिका का, ईमानदारी से देखें तो हर रिश्ता नए वक़्त के साथ ताल बिठाने की कोशिश कर रहा**

है। दोष किसी का नहीं है, शायद हर युग अपने सामाजिक संजाल को ऐसे ही बदलता है।"[2] ममता जी इस उपन्यास में दोषी किसी व्यक्ति विशेष को नहीं मानती और न ही किसी को आरोपी मानकर कटघरे में खड़ा करती हैं। वे तो सिर्फ उनकी कहानी बयां करती हैं, जो एक तरफ रिश्ते की उष्मा बचाने तो दूसरी तरफ अपने व्यक्तिगत पहचान को बनाये रखने की जद्दोजहद् में प्रयासरत हैं। सम्भवतः यही रिश्तों का मूल संघर्ष है, जिससे आज सबको गुजरना पड़ रहा है। आज जहाँ एक तरफ समाज के परम्परागत ढाँचे हैं, तो दूसरी तरफ वयस्क होती वैयक्तिकता है, जिसे अपना निजी स्पेस चाहिए किन्तु दोनों चीजें एक साथ सांमजस्य नहीं बना पातीं। ऐसे में बाहर–भीतर की टूट–फूट और यंत्रणा ही इसका नतीजा होता है।

प्रस्तुत उपन्यास आज के बिखरते–सिमटते व बनते–बिगड़ते दाम्पत्य संबंधों को आधुनिक सन्दर्भ में पूरी तटस्थता के साथ आकलन करता है। उपन्यास की नायिका रुचि शर्मा एक असफल वैवाहिक रिश्ते से निकलकर आगे बढ़ती है एवं आज उसकी समाज में स्वयं की पहचान है। दूसरी तरफ नायक सर्वेश है, जो पहले वैवाहिक रिश्ते में समझौता न कर पाने के कारण तलाकशुदा है। दोनों के पास एक–एक सन्तान है, गगन और अंश। रुचि का बेटा गगन माता–पिता के अलगाव व मार्गदर्शन के अभाव में नशे की चपेट में फँस जाता है। सर्वेश के बेटे की मृत्यु हो जाती है। संयोगवश सर्वेश गगन को चरस में लिप्त बेहोशी अवस्था में घर लाता है और उसके जीवन की रक्षा करता है। सर्वेश को गगन में अपना पुत्र दिखायी देता है। यही बिंदु सर्वेश और रुचि के निजी स्पेस को स्थायी रूप से जोड़कर एक नया और बड़ा स्पेस बनाती है।

आज विश्व में नारी–चेतना का प्रभाव–क्षेत्र व्यापक हो गया है। नारी को जब शिक्षा प्राप्त हुई तो वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुई। शिक्षा व आत्मनिर्भरता से उसने पूरे समाज को लाभान्वित किया है। नारी भले ही घर के बाहर निकली लेकिन उसका हेतु परिवार एवं घर ही रहा है। घर की सम्पूर्ण जिम्मेदारी उसी के कंधो पर है। सदियों से समाज में यह विचारधारा चली आ रही है कि पति–पत्नी मिलकर ही गृहस्थी की गाड़ी खींचते हैं लेकिन आज भी परिवार व पति की सम्पूर्ण जिम्मेदारी उसी पर है। यदि वह इन सबसे मुक्ति की कोशिश भी करती है तो समाज उसे बदचलन कह कर अपमानित भी करता है। हमारे देश की यही विडम्बना है कि पति कैसा भी हो, पत्नी को उसके दबाव में जीवन जीना पड़ता है। उपन्यास की नायिका रुचि का पहला विवाह उसके दादी–दादी पुण्य कमाने की अभिलाषा में जल्दबाजी में कर देते हैं, जब वह एम० ए० कर रही थी। रुचि का पति प्रभाकर उसे शारीरिक व मानसिक रूप से प्रताड़ित करता था। उसके लिए शादी का मतलब केवल शरीर मात्र ही था। रुचि इस रिश्ते में परेशान हो गयी थी, लेकिन रुचि की माँ का मानना था कि रुचि को प्रभाकर से समझौता कर लेना चाहिए परन्तु रुचि इस बात से सहमत नहीं थी। वह इस रिश्ते में घुट–घुट कर जी रही थी– "**इस शादी में रुचि को उन्होंने शुरु से आखिर तक बोलने की आजादी तक नहींदी थी।"[3]** ऐसे हालात से तंग आकर रुचि एक दिन घर छोड़कर अपने माता–पिता के पास आ गई। तब रुचि के माता–पिता जीवित थे, उन्होंने रुचि को समझाया कि बेटे को अपने पास ले आओ, लेकिन रुचि नहीं मानी। उसने कहा – "**प्रभाकर का दिया हुआ कुछ भी उसे मंजूर नहीं,बच्चा भी नहीं।[4]** रुचि, प्रभाकर का घर छोड़ने के बाद अनेक प्रयासों के पश्चात टी0वी0 चौनल में शो करती है। उसके संघर्ष से लेकर सफल होने तक की कहानी को चित्रित करते हुए ममता कालिया लिखती हैं– **"इससे आगे की कहानी रुचि ने अपने संकल्प और हौसले से लिखी। जोगीश्वर की तंग गलियों से चलकर वह 'क' चैनल और 'म' चैनल की सितारा शेफ बन जाती है।"[5]** वह लगातार अपने हुनर को

निखारती है। उसने पाक कला में किसी प्रकार की कोई उपाधि नहींली थी। माता–पिता को खाना बनाते हुए उसे रसोई कला आ गयी थी। उसने इस क्षेत्र में नाम और प्रतिष्ठा दोनों प्राप्त किया था और आर्थिक रूप से स्वयं को सुदृढ़ किया था– **''पैसा उस पर बरस रहा था, आयकर की राशि हर साल बढ़ रही थी।''**[6] रुचि की यह आर्थिक स्वतंत्रता उसे परिवार व समाज परनिर्भर रहने से मुक्त करती है साथ ही उसको निजी पहचान दिलाती है।

प्रस्तुत उपन्यास में ममता जी ने रुचि के माध्यम से यह भी बताया है कि पुरुष सोचता है कि वह नारी पर कितना भी अत्याचार कर ले परन्तु वह उसके पास लौटकर आयेगी क्योंकि–''**प्रभाकर के जेहन में स्त्री की छवि एक समर्पित, सहनशील अनुगामिनी की थी।''**[7] लेकिन रुचि वापस नहीं आती है। प्रभाकर की पुरुष मानसिकता के लिए यह बात स्वीकार करना असह्य था कि उसकी पत्नी उसको छोड़कर चली जाए और इतना ही नहीं अपितु अपने जीने का एक नया रास्ता बनाए। बहुत दिनों तक उसे इस बात पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि वह सोचता था कि– **''एक दिन रुचि लुटी–पिटी वापस घर आएगी और उसके पैरों में गिरकर अपनी भूल–चूक की माफी मांगेगी।''**[8] इस प्रकार प्रभाकर का चरित्र पुरुष प्रधान समाज का प्रतिनिधि है, जो नारी की भावनाओं की अवहेलना करता है लेकिन रुचि का घर छोड़ना, विद्रोह व तलाक लेना नारी के नवीन चेतना का परिचायक है। वह समाज की आलोचना का सामना करती है लेकिन अपनी गरिमा बनाए रखती है।

सर्वेश नारंग खोजी पत्रकार था। तीन वर्ष पूर्व वह अपनी पत्नी से तलाक ले चुका था। रुचि और सर्वेश दोनों समीप आते हैं, तो सर्वेश साथ रहने का प्रस्ताव रखता है तो वह कहती है–**''मेरा कमरा हर किसी का प्रवेश बर्दाश्त नहीं करता।''**[9] क्योंकि रुचि सहजीवन को गलत रिवाज मानती है। बिना शादी के वह सर्वेश के साथ नहीं रहना चाहती है। उसे लगता है, सहजीवन एक असंगत, अस्थिर व अस्थायी अनुबन्ध है, जिसमें पुरुष से ज्यादा स्त्री का नुकसान है। उपन्यास की नायिका रुचि को लगता है कि–**''ऐसा निर्णय उसकी छवि को धक्का पहुंचाएगा।''**[10] वास्तव में नारी स्वयं को कितना भी आधुनिक माने लेकिन सहजीवन को सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त है। वह स्वयं इस सदर्भ में कहती है–**''मैं सहजीवन को गलत रिवाज़ मानती हूँ। हमारे ऊपर समाज की जिम्मेदारी है।''**[11] इसलिए रुचि कभी भी सर्वेश के बहकावे में आकर अपनी प्रतिष्ठा धूमिल नहीं करना चाहती है। बाद में दोनों औपचारिक विवाह के पश्चात साथ रहने लगते हैं।

वर्तमान समाज में नारी की दशा में सुधार हुआ है, वह अबला से सबला बनने की दिशा में आगे बढ़ी है। पुरुष प्रधान समाज के बंधनों के खिलाफ उसने विद्रोह किया है। वह अपने अधिकारों के प्रति सजग हुई है किन्तु पुरुष का परम्परागत मन नारी के मौलिक अधिकारों को स्वीकार नहीं कर पाता है। वह पितृसत्तात्मक प्रवृत्ति की वजह से उसे दबाना चाहता है लेकिन आज नारी सती साध्वी या पति परमेश्वर की मानसिकता को तोड़कर स्वतंत्र होना चाहती है। यह सामंती समाज उसे आज केवल माँ, पत्नी व बेटी के रूप में ही स्वीकारना चाहता है। पुरुष आज भी नारी में परम्परागत कुल लक्ष्मी या कुल वधू वाले स्वरूप को ढूंढ़ता है, उसे नारी का आधुनिक होना बर्दाश्त नहीं है। आधुनिक होने पर स्त्री के चरित्र पर उंगली उठाने लगता है। उपन्यास में प्रभाकर के माध्यम से इसी पुरुष वर्चस्ववादी मानसिकता का चित्रण हुआ है– **''वह अक्सर दोस्तों के बीच शेखी बघारता 'आय एम सरप्लस फार माय वाइफ'। इन जुमलों पर ठहाका लगता और प्रभाकर का मनोबल कई गुना बढ़ जाता।''**[12] लेकिन आज वास्तविकता यह है कि इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक तक देश में शिक्षा व रोजगार ने लड़के–लड़कियों के सामने उम्मीदों का संसार खोल दिया है। बड़ी संख्या में लड़कियाँ आज पढ़

लिखकर काम पर जाने लगी हैं। माता–पिता के दबाव में उन्हें शादी के बंधन में बंधना पड़ता है, पर दिन–प्रतिदिन यह बंधन उनके विकास व स्वतंत्रता में बाधक बन जाता है। प्रस्तुत उपन्यास में सर्वेश व रुचि ने नूतन प्रणय प्रणाली का परिचय दिया। दोनों एक दूसरे के कार्य जगत की व्यस्तताओं का ख्याल रखते हैं। दोनों अपनी–अपनी आजादी के साथ विवाह के बंधन में बंध जाते हैं। रुचि उसको कहती है कि– **''तुम तो मेरे पन्द्रह अगस्त हो। वह मुझे अपनी छब्बीस जनवरी कहता है।''**[13] नारी की यह सामाजिक चेतना उसे पुरुष का विरोधी नहीं बनाती, बल्कि सहयोगी बनाती है। रुचि व सर्वेश का विवाह नए भारत की झलक है, जहाँ नारी अपने शर्तों पर रिश्ता बनाती है। इस प्रकार बड़ी उम्र के इस समझदार संबंध में रुचि और सर्वेश ने नूतन प्रणाली का प्रणय निर्मित किया है। साथ ही उपन्यास में पति–पत्नी के संबंध या पारिवारिक विघटन को मीडिया किस प्रकार विज्ञापन का नया साम्राज्य बना देता है, इस पर भी गहन विचार किया गया है। आजकल मीडिया आमजन के जीवन पर इतना हावी हो गया है कि किसी का व्यक्तिगत क्षण व्यक्तिगत नहीं रहा है। सर्वेश व रुचि के जीवन में गगन (रुचि के पहली शादी से उत्पन सन्तान) की मौजूदगी का पता जब पहली बार सर्वेश को होता है, तो वह नाराज हो जाता है। क्योंकि विवाह के पूर्व रुचि ने उसे यह बताया नहीं था। जब उसे चता चलता है तो वह रुचि से झगड़ता है तो इसे मीडिया और अखबार में खूब खबर बनायी जाती है–**''दृश्य मीडिया पर सी.सी. डी. में खींची गई तस्वीर कोण बदल–बदल कर दी जाने लगी। इस पर विस्तृत बहस छिड़ गई कि रुचि के चेहरे का भाव क्या है, क्रोध अथवा हर्ष का, विषाद अथवा सुख का।''**[14] यह वक्तव्य यह दर्शाता है कि मीडिया स्त्री को सशक्त तो बनाता है, लेकिन समाज की नजरों में उसकी छवि को नियंत्रित भी करता है। वर्तमान समाज में सोशल मीडिया में टी0वी0 स्त्री की आवाज को बढ़ावा देते हैं लेकिन ट्रोलिंग व नैतिक पुलिसिंग चुनौतियां हैं। ममता जी यहां नारी की सहनशीलता की सीमाओं को चुनौती देती हैं।

इस प्रकार 'सपनों की होम डिलीवरी' उपन्यास ऐसी नारी की कथा को बयान करता है, जो प्रभाकर शर्मा जैसे बद्दिमाग, लंपट पति से असफल वैवाहिक जीवन का दंश झेलने के पश्चात जीवन जीने की नई राह तलाशती है। आलोच्य उपन्यास में नारी चिन्तन को पर्याप्त जगह मिली है। रुचि की विभिन्न मानसिकताओं का यथार्थ एवं सजीव चित्र लेखिका ने चित्रित किया है। साथ ही लेखिका यह भी प्रश्न उठाती हैं कि– **''शहर में अकेले रहने वाली लड़कियाँ आखिर क्या करें। वह कहाँ, किससे, कितनी हद तक सम्पर्क बनाएँ।''**[15] सर्वेश व रुचि के जीवन में गगन का आना दरारें अवश्य उत्पन्न करता है, मगर सही समय पर सर्वेश का सही निर्णय उपन्यास को नवीन मोड़ देता है। सर्वेश जैसे आदर्श पात्र की भूमिका पुरुषवादी चिन्तन के लिए जवाबदेह है।

7.उद्देश्य–

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य बहुमुखी है, जो उपन्यास 'सपनों की होम डिलीवरी' में निहित नारी चेतना को गहराई से समझने और विश्लेषित करने पर केन्द्रित है। इस शोध पत्र के प्रमुख उद् देश्य निम्नलिखित है–

1. प्रथम उद्देश्य है कि 'सपनों की होम डिलीवरी' में नारी चेतना के विविध आयामों – स्वालंबन, आत्मसाक्षात्कार व संबंधों की समानता का विश्लेषण करना। उपन्यास में रुचि का जीवन इन आयामों को जीवंत करता है।

2. द्वितीय उद्देश्य है कि आधुनिक भारतीय समाज में नारी की बदलती भूमिका को उपन्यास के सन्दर्भ में समझना है।
3. तीसरा उद्देश्य उपन्यास की प्रासंगिकता को समसामायिक नारी मुद्दों से जोड़ना, जिससे निष्कर्ष में नारी चेतना के सशक्तिकरण की संभावनाएं उजागर हों।
4. चतुर्थ उद्देश्य इस शोध पत्र के माध्यम से ममता कालिया की रचनाओं में नारी चेतना की निरंतरता को रेखांकित करना है।
5. पंचम उद्देश्य मूल साहित्यिक भाषा में एक स्वतंत्र शोध पत्र प्रस्तुत करना है जो साहित्यिक चोरी से मुक्त हो।
6. इन उद्देश्यों के माध्यम से प्रस्तुत शोध पत्र नारी चेतना को सामाजिक व साहित्यिक परिपेक्ष्य में स्थापित करेगा, जो भविष्य के अध्ययनों के लिए आधार प्रदान करेगा।

8. निष्कर्ष –

ममता कालिया का उपन्यास 'सपनों की होम डिलीवरी' नारी चेतना का सशक्त दस्तावेज है, जो आधुनिक नारी के महत्वाकांक्षाओं, संघर्ष एवं उसके सामाजिक दबावों को उजागर करता है। रुचि शर्मा का चरित्र आधुनिक भारतीय नारी के उन चुनौतियों को व्यक्त करता है, जो वह अपनी स्वतंत्रता एवं अस्मिता की खोज में सामना करती है। ममता कालिया की यथार्थवादी लेखन शैली व साहित्यिक भाषा इस उपन्यास को विशेष स्थान प्रदान करती है। प्रस्तुत शोध पत्र न केवल नारी चेतना को व्यक्त करता है, अपितु यह पाठकों को नारी की बदलती भूमिका एवं तात्कालिक सामाजिक परिवर्तनों पर विचार करने के लिए प्रेरित भी करता है। साथ ही इस शोध पत्र में नारी व पुरुष के संबंधों को नये सिरे से देखने व परखने की प्रशंसनीय कोशिश भी मिलती है। आज के इस पारिवारिक टूटन के दौर में यह उपन्यास बेशक 'खुशियों की होम डिलीवरी' की मिशाल है।

9.आभार–

प्रस्तुत शोध पत्र लेखन में सर्वप्रथम अपने आदरणीय गुरुवर एवं शोध–निर्देशक डॉ० महेन्द्र कुमार त्रिपाठी के मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए गहरी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। उनके मार्गदर्शन व सहयोग ने ही इस शोध पत्र को दिशा प्रदान की है। साथ ही हिंदी साहित्य के समीक्षकों व विद्वानों के प्रति आभार जिन्होंने इस शोध पत्र के विश्लेषण में आधार प्रदान किया। विशेष आभार ममता कालिया जी को जिन्होंने अपनी रचनाओं में नारी चेतना को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है।

10.सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. ममता कालिया, सपनों की होम डिलीवरी, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज, सं0 2021, प्राक्कथन से
2. वही, बैककवर से
3. वही, पृ०44
4. वही, पृ० 24
5. वही, पृ०24
6. वही, पृ०18
7. वही, पृ० 66
8. वही, पृ० 66
9. वही, पृ० 31

10. वही, पृ० 54
11. वही, पृ० 55
12. वही, पृ० 66
13. वही, पृ० 61
14. वही, पृ० 88
15. वही, पृ० 33

दीक्षा सिंह ई–मेल– dikshavats9451@gmail.com